

प्रतिपाद्य

मीरा मूल रूप से भगवान कृष्ण की भक्त थीं। अतः उनके पदों का प्रतिपाद्य है - कृष्ण - भक्ति। इन पदों में उन्होंने कृष्ण के दो रूपों की उपासना की है - रक्षक रूप तथा प्रेमी रूप।

पहले पद में मीरा ने कृष्ण को अपना संरक्षक माना है। वे प्रार्थना करते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार कृष्ण ने द्रौपदी की लाज रखी थी, प्रह्लाद के लिए नरहरि अवतार लिया था, डूबते हाथी को बचाया था। उसी प्रकार वे अब अपनी दासी मीरा की रक्षा करें।

दूसरे पद में मीराबाई अपने प्रियतम कृष्ण के समीप रहने के लिए उनकी सेविका बन जाना चाहती हैं। वे चाहती हैं कि उन्हें वृन्दावन में कृष्ण के बाग-बगीचे लगाने का सौभाग्य मिले। वे नित्य प्रातः उठकर प्रभु के दर्शन करेंगी। दिन-रात उन्हें याद करेंगी और उनकी लीला गाएँगी। वे स्वयं लाल साड़ी पहनकर उनसे मिलना चाहती हैं। वे पीतांबरधारी साँवले कृष्ण की आराधना में लीन होना चाहती हैं। उनका हृदय प्रभु के दर्शन पाने के लिए बहुत व्याकुल है।

**क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -**

1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है ?  
उत्तर - पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती उन्हें उनके उन रूपों का स्मरण कराकर की है जिसके द्वारा उन्होंने अपने भक्तों की रक्षा की थी। वे उन्हें कहती हैं कि जिस प्रकार उन्होंने द्रौपदी की चीर(वस्त्र) बढाकर भरी सभा

में उसकी लाज बचाई, प्रह्लाद की रक्षा करने के लिए नरसिंह का रूप धारण किया, हाथी को डूबने से बचाया | उसी प्रकार वे उनकी भी पीड़ा दूर करें |

2. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं ? स्पष्ट कीजिए |  
उत्तर - मीरा अपने आराध्य 'श्रीकृष्ण' के समीप रहने के लिए उनकी चाकरी करना चाहती हैं | दासी बनकर वे श्रीकृष्ण के लिए बाग लगाएँगी और उनके समीप रह दर्शन पा सकेंगी | वे श्रीकृष्ण की लीलाओं का गायन वृन्दावन की गलियों में करेंगी जिससे उन्हें श्रीकृष्ण के नाम का स्मरण प्राप्त होगा |

3. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य का वर्णन कैसे किया है ?

उत्तर - मीरा श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहती हैं कि उनके सिर पर मोर के पंखों का मुकुट है, गले में वैजंती फूलों की माला है | वे पीले रंग का वस्त्र धारण किए हुए हैं | हाथों में बाँसुरी लिए जब वे वृन्दावन में यमुना के तट पर गायें चराने ले जा रहे होते हैं तब यह रूप मनमोहक होता है |

4. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए |

उत्तर - मीराबाई की भाषा सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा है, जिसमें ब्रज, राजस्थानी तथा गुजराती का मिश्रण है | कहीं-कहीं पंजाबी शब्दों का प्रयोग भी किया गया है | पदावली कोमल, भावानुकूल व प्रवाहमयी है, पदों में भक्तिरस है तथा अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, रूपक आदि अलंकार का भी प्रयोग किया गया है |

5. वे कृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं ?

उत्तर - मीरा कृष्ण को पाने के लिए निम्नलिखित कार्य करने को तैयार हैं :



- क) वे दासी बनकर उनकी सेवा करना चाहती हैं ।  
ख) वे उनके लिए बाग-बगीचे लगाना चाहती हैं ।  
ग) वृन्दावन की गलियों में श्रीकृष्ण की लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं ।  
घ) वे कुसुम्बी(लाल) रंग की साड़ी पहनकर आधी रात में कृष्ण के दर्शन करना चाहती हैं ।

## ख) निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -

1. हरि आप हरो जन री भीर ।

द्रौपदी री लाज राखी, आप बढायो चीर ।

भगत कारण रूप नरहरि, धरयो आप सरीर ।

उत्तर - इन पंक्तियों में मीरा कृष्ण से जन-जन की पीड़ा हरने का आग्रह करती हैं। वे कहती हैं कि जिस प्रकार उन्होंने द्रौपदी के वस्त्रों को बढाकर भरी सभा में उसकी लाज बचाई, प्रह्लाद की रक्षा करने के लिए नरसिंह का रूप धारण करके हिरण्यकश्यप को मारा उसी प्रकार आप मनुष्यों की पीड़ा भी हरे ।  
इन पंक्तियों में मीरा ने कृष्ण के भक्तों के प्रति दयामय रूप का वर्णन किया है ।  
ब्रज एवं राजस्थानी भाषा का प्रयोग हुआ है । 'हरि' शब्द में श्लेष अलंकार है ।  
भाषा में कोमलता लाने के लिए कुछ शब्दों में परिवर्तन किया गया है , जैसे -  
'शरीर' के स्थान पर 'सरीर' का प्रयोग किया गया है ।

2. बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुंजर पीर ।

दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारो भीर ।

उत्तर - इन पंक्तियों में मीरा ने कृष्ण से अपने दुखों को दूर करने की विनती की है । वे अपने आराध्य से प्रार्थना करती हैं कि जिस तरह आपने डूबते गजराज को

बचाया और उसके कष्ट दूर करने के लिए मगरमच्छ को मारा। उसी तरह मेरी भी पीड़ा दूर करें।

भाषा सरल तथा सहज है। इन पंक्तियों में दास्यभक्ति रस है। ब्रज और राजस्थानी भाषा का प्रयोग हुआ है। 'काटि कुंजर' में अनुप्रास अलंकार है। 'पीर-भीर' तुकांत पद है। प्रथम पंक्ति में दृष्टांत अलंकार का प्रयोग हुआ है।

3. चाकरी में दरसन पास्यूं, सुमरण पास्यूं खरची।

भाव भगती जागीरी पास्यूं, तीनूं बातों सरसी।

उत्तर - इन पंक्तियों में मीरा कहती हैं कि वे श्रीकृष्ण की चाकरी करने को तैयार हैं। इससे उन्हें श्रीकृष्ण के नाम का स्मरण करने का अवसर प्राप्त हो जाएगा तथा भावपूर्ण भक्ति की जागीर भी प्राप्त होगी। इस प्रकार दर्शन, स्मरण और भाव-भक्ति नामक तीनों बातें उनके जीवन में रच-बस जाएंगी।

भाषा सरल तथा सहज है। इन पंक्तियों में दास्यभक्ति रस है। ब्रज और राजस्थानी भाषा का प्रयोग हुआ है। 'भाव-भगती' में अनुप्रास अलंकार है। 'खरची-सरसी' तुकांत पद है।